

॥ हयग्रीव संपदास्तोत्रम् ॥

हयग्रीव हयग्रीव हयग्रीवेति वादिनम् ।
नरं मुंचंति पापानि दरिद्रमिव योषितः ॥ १ ॥

हयग्रीव हयग्रीव हयग्रीवेति यो वदेत् ।
तस्य निस्सरते वाणी जहुकन्याप्रवाहवत् ॥ २ ॥

हयग्रीव हयग्रीव हयग्रीवेति यो ध्वनिः ।
विशोभते स वैकुंठकवाटोद्वाटनक्षमः ॥ ३ ॥

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं हयग्रीवपदांकितम् ।
वादिराजयतिप्रोक्तं पठतां संपदां पदम् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीमद्वादिराजपूज्यचरणविरचितं हयग्रीवसंपदास्तोत्रं संपूर्णम् ॥